

سامنس ایک ٹوٹے ہوئے نظام میں علامات کا علاج کرنے کا نام ہے

تعارف

جبے دہائیوں سے "زرعی سامنس" کہا جاتا ہے، وہ دراصل زرعی بیکنالوجی تھی۔ یعنی ان پُس (inputs) کا سامنس۔ یہ ایک ٹوٹے ہوئے نظام کی علامات کے علاج کا سامنس تھا، نہ کہ اس بات کو سمجھنے اور لاگو کرنے کا سامنس کہ ماحولیاتی نظام دراصل کس طرح کام کرتا ہے تاکہ ایک پیداواری اور مضبوط نظام قائم ہو سکے۔

سامنس کا غلط استعمال

اصل سامنس یہ ہے کہ:

- » قدرت کا مشاہدہ کیا جائے،
- » بنیادی اصول سمجھے جائیں،
- » پھر ان اصولوں کو لاگو کیا جائے۔

قدرتی نظام جس نے چراغاں اور جنگلات پیدا کیے، چار لازمی اصولوں پر قائم ہے:

1. نوٹل (No-Till): زمین کو اسٹپٹ کرتا ہے اور خود نہیں کیا جاتا۔
2. زندہ جڑیں (Living Roots): سال بھر جڑیں مٹی میں رہتی ہیں اور خود بینی جانداروں کو خوراک دیتی ہیں۔
3. مٹی کی ڈھال (Soil Armor): زمین ہمیشہ نامیانی باقیات (لٹھ) سے ڈھکی رہتی ہے۔
4. حیاتیاتی تنوع (Biodiversity): مختلف پودے اور جانور ایک مضبوط اور متوازن نظام بناتے ہیں۔

روایتی صنعتی زراعت درج بالا ان تمام اصولوں کی خلاف ورزی کرتی ہے۔ اس نے قدرتی اصولوں سے آغاز نہیں کیا بلکہ یہ سوچا: "ہم اس نقصان دہ طریقہ کاشتکاری کو مزید کب تک چلا سکتے ہیں؟" جواب آیا:

- » کیمیائی کھادوں سے،
- » زہروں (pesticides) سے،
- » بھاری مشینری سے۔

یہ اصل میں پیداوار کی سامنس نہیں تھی بلکہ تباہی کو تھوڑی دیر اور بڑھانے کی سامنس تھی۔

تباه کن متاثر

اس غلط سامنس کے پانچ بڑے متاثر نکلے:

- » زمین کی تباہی۔
- » پانی کے ذخائر کی کمی۔
- » ماحولیاتی تبدیلی میں اضافہ۔
- » پیداوار کی لگت میں اضافہ۔
- » زہریلی اور غذائی کمی والی خوراک۔

PQNK: اصل سائنس کا استعمال

PQNK قدرتی ماحولیاتی سائنس پر مبنی ایک مائل ہے جو یہ دیکھتا ہے کہ:

- فوٹو سنتھیزر نظام کا نجٹن ہے۔
- مٹی کے خورد بینی جاندار اصل کارکن ہیں۔
- کاربن اور گلومالن مٹی کی بناؤٹ بناتے ہیں۔
- لمحہ درجہ حرارت اور نمی کو قابو میں رکھتا ہے۔

یہ صرف ایک تبادل نہیں بلکہ ایک سائنسی انقلاب ہے جو زمین کو دوبارہ زندہ کرتا ہے۔

हिंदी अनुवाद

एक टूटे हुए सिस्टम में सिर्फ लक्षणों का इलाज करने का विज्ञान
परिचय

जिसे दशकों से "कृषि विज्ञान" कहा गया, वह असल में कृषि तकनीक थी – यानी इनपुट्स (inputs) का विज्ञान। यह टूटे हुए सिस्टम में लक्षणों का इलाज करने का विज्ञान था, न कि इस बात को समझने और लागू करने का विज्ञान कि प्राकृतिक तंत्र वास्तव में कैसे काम करता है।

विज्ञान का गलत उपयोग

सच्चा विज्ञान यह है कि:

प्रकृति का अवलोकन किया जाए,
उसके मूल सिद्धांत समझे जाएं,
और फिर उन सिद्धांतों को लागू किया जाए।

प्राकृतिक तंत्र जिसने घासभूमि और जंगल बनाए, चार अनिवार्य सिद्धांतों पर आधारित है:

1. नो-टिल (No-Till): मिट्टी को उलट-पलट कर नष्ट नहीं किया जाता।
2. जीवित जड़ें (Living Roots): सालभर जड़ें मिट्टी में रहती हैं और सूक्ष्मजीवों को भोजन देती हैं।
3. मिट्टी की ढाल (Soil Armor): मिट्टी हमेशा जैविक अवशेष (मल्व) से ढकी रहती है।
4. जैव विविधता (Biodiversity): विभिन्न पौधे और जानवर मिलकर संतुलित तंत्र बनाते हैं।

परंपरागत औद्योगिक कृषि इन सिद्धांतों को तोड़ती है। उसने पारिस्थितिकी के मूल सिद्धांतों से शुरुआत नहीं की, बल्कि यह पूछा: "हम इस विनाशकारी खेती को और कितने समय चला सकते हैं?" उत्तर मिला:

रासायनिक खादों से,
कीटनाशकों से,
भारी मशीनरी से।

यह उत्पादन का विज्ञान नहीं था बल्कि विनाश को लंबा खींचने का विज्ञान था।

विनाशकारी परिणाम

इस गलत विज्ञान के पाँच बड़े परिणाम हुए:

1. मिट्टी का नाश।
2. जल संसाधनों की कमी।
3. जलवायु परिवर्तन की गति बढ़ना।
4. उत्पादन लागत बढ़ना।
5. विषाक्त और पोषक तत्वों से रहित भोजन।

PQNK: वास्तविक विज्ञान का प्रयोग

PQNK प्राकृतिक पारिस्थितिकी विज्ञान पर आधारित एक मॉडल है जो यह समझता है कि:

प्रकाश संश्लेषण (Photosynthesis) प्रणाली का इंजन है।

मिट्टी के सूक्ष्मजीव असली कार्यकर्ता हैं।

कार्बन और ग्लोमालिन मिट्टी की संरचना बनाते हैं।

मल्व तापमान और नमी को नियंत्रित करता है।

यह सिर्फ एक विकल्प नहीं बल्कि एक वैज्ञानिक क्रांति है जो धरती को पुनर्जीवित करती है।